सत्संग परमसंत पुष्करदयाल जी महाराज

दिनांक 20 सितम्बर 2015,

(फरीदाबाद, सै0–10)

! राधा–स्वामी.!

करीब 800 साल पहले दिल्ली में निजामुद्दीन ओलिया था। उसका एक चेला था अमीर खुसरो। निजामुद्दीन ने अपनी गद्दी अमीर खुसरो को दे दी। कैसे दे दी? काफी परिक्षाएँ ली उसकी। एक बार अमीर खुसरो अपने व्यापार के सिलसिले में अफगानिस्तान गया हुआ था, तो निजामुद्दीन ओलिया के पास एक गरीब आदमी आया और बोला– बाबा मैं बहुत गरीब हूँ, मेरी बेटी की शादी है, मेरी कुछ मदद करो। निजामुद्दीन बोला– मैं खुद फकीर हूँ, मैं तुम्हारी मदद् कैसे करूँ? मेरे पास पैसे नही हैं। हाँ मेरे पास ये खडाऊ हैं, अगर ये आपके कुछ काम आ जाएँ तो इन्हें ले जाओ। बो आदमी निजामुद्दीन की खडाऊ लेकर चल दिया। वो रास्ते में जा रहा था और उधर से अमीर खुसरो आ रहा था अपने काफिले के साथ। उसके पास 10–12 ऊँट थे और वो सभी सामान से भरे थे, और आगे एक ऊँट पर वो खुद था। जब वो आदमी खडाऊ लेकर अमीर खुसरो की साईड से गुजरा तो अमीर खुसरो को अपने गुरू की खुशबू आ गई। वो सोचने लगा, मेरे गुरू जी की खुशबू कहाँ से आई? वो रूका और जैसे– जैसे वो आदमी दूर जा रहा था तो खुशबू भी कम होती जा रही थी। अमीर खुसरो उस आदमी के पास गया तो खुशबू तेज हो गई। अमीर खुसरो ने उस आदमी से पूछा–तुम कौन हो और कहाँ से आ रहे हो? आदमी ने बताया– मैं बाबा निजामुद्दीन के पास गया था मदद के लिए, मेरी लडकी की शादी है। बाबा के पास कुछ नही था तो उन्होने अपनी खडाऊ दे दी, अब मैं इन खडाऊ का क्या करूँ? अमीर खुसरो ने कहा– तुम इन खडाऊ को मुझे दे दो और बदले में मेरे सारे ऊँट ले लो। उसने अपने सारे ऊँट सामान से भरे उसे दे दिए और अपने पास सिर्फ एक ऊँट रख लिया। जब अमीर खुसरो वो खडाऊ लेकर निजामुद्दीन के पास पहुँचा तो निजामुद्दीन ने कहा– क्या ये खडाऊ बहुत मंहगे पड गए? अमीर खुसरो बोला– नही जी, बहुत सस्ते पड गये। एक परीक्षा ये ली। दूसरी परीक्षा क्या ली उसने? एक बार उसने अमीर खुसरो से कहा–सब मक्का मदीना जा रहें हैं, आप भी जाओ। अब उसको गुरू का हुक्म मानना था, उसने विस्तर सिर पर रखा और हाथ में लोहे की पेटी ली। जाने से पहले वो सोचने लगा जाने से पहले एक बार मैं गुरू जी से मिल आऊ। वो गुरू जी के पास गया और गुरू जी के तीन चक्कर लगाये और बोला– हुजूर मेरा मक्का भी हो गया और मदीना भी हो गया। इसी तरह गुरू परीक्षा लेता है।

एक बार जब निजामुद्दीन को लगा कि अब मेरा समय आ गया है यहाँ से जाने का, तो मेरी गद्दी का कोई वारिश होना चाहिए, तो उसने एक और परीक्षा ले ली सबसे। उसके बहुत सारे चेले थे। उसने सब चेलो से कहा– चलो आज दिल्ली घूमने चलते हैं, दिल्ली में एक कुतुब रोड था, वहाँ वेश्या रहती थीं, वहीं लेकर गया सबको। वहाँ एक वेश्या उसकी चेली थी। गुरू जी ने कहा– तुम सब यहाँ नीचे बैठो और मैं ऊपर जाता हूँ। वो ऊपर चला गया और वेश्या से बोला– आज तेरा इम्तिहान है, तू एक काम कर नौकर को बाजार भेज दे और वहाँ से एक तस्तरी में एक बोतले रखे और उसके ऊपर एक कपडा ढके, तो नौकर गया बाजार तस्तरी में बोतल रखी और उसके ऊपर कपडा रखा और लेकर चला गया ऊपर, सारे चेले देखने लगे, अरे पहले तो गुरू जी कोठे पर आ गए और अब तो शराब भी आ गई। सारे चेले हैरान, अरे आज हमारे गुरूजी को क्या हो, तो एक–एक करके चेले वहाँ से खिसकने लगे, रात हो गई, अभी गुरू जी ऊपर ही थे। तो सारे चेले वहाँ से चले गए। खाली एक चेला वहाँ रह गया, उसका नाम था अमीर खुसरो। जब शुबह गुरू जी नीचे आए तो अमीर खुसरो वहाँ पर बैठा हुआ था। गुरू जी बोले– सब कहाँ चले गए? बो बोला–

सब चले गए। गुरू जी बोंले– तू क्यों नही गया? बो बोला– मैं कहाँ जाऊ? मैं तो आपके साथ ही हूँ, आप जहाँ जाओगे, मैं भी वहीं जाऊँगा, मैं कहीं नही जाता आपको छोडकर। तो उस दिन गुरू जी ने ऐलान किया आज से मेरी गद्दी का वारिस अमीर खुसरो हैं। ये है गुरू चेले का रिश्ता।

ढूँढ मुझको अपने मन में, मैं तो तेरे पास हूँ।
मैं न कासी हूँ न मथुरा, मैं न गिर कैलास हूँ।1।
तू हुआ मेरा तो मैं भी देख तेरा बन गया।
कर भरोसा तेरा मैं ही, तेरी सच्ची आस हूँ।2।
तेरे भीतर मेरी बैठक, आँख से ले देख अब।
मैं नही पृथ्वी की मूरत, मैं नही आकास हूँ।3।
किस भरम में है पडा, निभ्रान्त चित से शांत हो।
आप में हूँ योग युक्ति, आप शब्द अभ्यास हूँ।4।
राधा स्वामी नाम ले, और नाम में विश्राम ले।
सुख ले और आनन्द ले मुझसे, मैं ही सुखरास हूँ।5।

हमारी बदकिस्मती यही है कि जो मालिक हमारे अंदर रहता है, 24 घण्टे हमारे साथ है, उसे ढूँढने हम मंदिरों, मस्जिदों, गिरिजा घरों में जाते हैं, और यही हमारी सबसे बडी बदकिस्मती है। हम केदारनाथ जाते हैं, अगर वहाँ पर कुछ होता तो पानी की एक लहर आई और 70 हजार आदमियों को बहा ले गई। उन विचारों का क्या कसूर था वो तो भगवान से मिलने आए थे, लेकिन वहाँ पर भगवान नही था। वहाँ तो पत्थर और पानी था, एक तरफ पत्थर रखें हैं और दूसरी तरफ से पानी बह रहा है, बस यही है वहाँ पर। हाँ एक बात जरूर है कुछ लोगों की मन्नत पूरी हो जाती है। उनका भाव, उनका विश्वास काम करता है और उस भाव, विश्वास के लिए आपको केदारनाथ, वैष्णो देवी जाने की क्या जरूरत है? ये भाव तो अपने घर में बैठकर भी हो जाएगा। कोई जरूरत नही है आपको वैष्णों देवी जाने की, ये तो एक भेड चाल है। जैसे– पता है तुमको मेरी बहू वैष्णो देवी गई और उसके लडका हो गया और फैल गई बात सारे शहर में, और सब अपनी–2 बहुओं को ले गए वैष्णो देवी कि लडका हो जाएगा। इसकों बोलते हैं भेड चाल। लेकिन जो है वो अपने अंदर ही है। अंग्रेजी में कहते हैं– Self Realisation is God Realisation इसका मतलब है अगर तुमको भगवान को ढूँढना है तो पहले अपने आपको ढूँढों, तुम कौन हो? अपने आपको ढूँढते–23 तुमको खुद ही पता चलेगा भगवान कौन है?

महा–मोह तम पुंज, जासु वचन रवि करनी कर।

ये तुलसी दास ने कहा है– संसार जो है अज्ञान के अंधकार का भंडार है, यहाँ चारो तरफ अज्ञान ही अज्ञान है और ये अज्ञान काल ने फैलाया है, क्योंकि जिसको ज्ञान मिल गया वो काल के चुंगल से छूट गया। इसलिए वो दयाल के पास किसी को जाने नही देता, क्योंकि जो भी दयाल के पास गया, वो काल के चुंगल से छूट गया। इसलिए गुरू जो मुख से बोलता है उसे पकडो, तभी तो तुम तर जाओगे। संसार अज्ञान के अंधकार का भंडार है, कैसे? एक आदमी अंधेरे मे जा रहा है, उसको एक कीडा सा दिख गया और वो चिल्लाने लगा साँप–2, फिर एक आदमी आता है टार्च लेकर और रोशनी डालता है, वो साँप नही था वों एक रस्सी थी। अब वो पीछे से टार्च डालने वाला कौन था? वो था गुरू और गुरू ने ज्ञान दिया कि जो तुम साँप समझकर डर रहे हो, ये साँप नही है, ये तो रस्सी है। इस संसार में यही हमारी हालत है। हम हर रस्सी को साँप समझकर डरते रहते हैं, मर गए–मर गए। गुरू आता ही इसलिए है तुमको अंधकार से प्रकाश में ले जाने के लिए।

नही रूप कोई, हैं सब रूप तेरे।

मालिक का कोई रूप नही है, लेकिन हम सब जो हैं उसी का रूप हैं। आप जिस रूप में मालिक को याद करोगे वो उसी रूप में आपको दर्शन देगा।

मैं एक बार वांशिगटन में था। वहाँ मेरी पत्नि की बहन का लडका रहता है, एक दिन हम बैठे थे तो अचानक मेरी पत्नि की बहन के लडके की बहू मुझसे कहने लगी मुझे शिव जी के दर्शन हो गए। मैने पूछा कैसे दर्शन हो गए? वो कहने लगी मैं दरवाजे के पास बैठी थी और ख्याल में खोई थी, अचानक शिव जी मेरे सामने प्रकट हो गए। मैने पूछा कैसे थे वो? कहने लगी जैसे होते हैं, लंबे बाल, गले में साँप, हाथ में त्रिशूल था। अब मैं समझ गया उसने क्या देखा? मैने उससे पूछा– क्या आपने कभी शिवजी का कैमरा फोटो देखा है? उसने कहा– नही देखा, फिर मैंने पूछा कि तुमने कैसे पहचान लिया कि वही शिवजी हैं। उसने कहा– कितने फोटो हैं शिवजी के कैलेंण्डर में। मैने कहा– बस! मेरे सवाल का जबाब मिल गया। मैंने उसको समझाया, जो मालिक है, उसका कोई रूप नही है, जिस रूप मैं हम मालिक से प्रेम करेंगे, याद करेंगे, वो उसी रूप में प्रकट होकर हमारे सामने आएगा। आपने कभी शिवजी का कैमरा फोटो देखा नही है, ये एक चित्रकार ने किताब पढ–2 कर कैलेंण्डर में, पोस्टरों में उसका फोटो बनाया है और सारी दुनिया इन फोटो को देखकर यही समझती है कि शिवजी ऐसे ही हैं। तो मैंने कहा– जो आपने देखा वो ठीक देखा, आपसे कोई गलती नही हुई, आपके मन में शिव की एक छवि बनी थी कि शिवजी ऐसे होते हैं और जब आपने उसी रूप का ध्यान किया तो वही रूप आपके सामने प्रकट हो गया। इसे बोलते हैं मन का खेल।

बाबा फकीर के कई किस्से हैं। एक आदमी कहता है– मेरा मकान जल रहा था, मैंने आपका ध्यान किया, आप आ गए और आपने आग बुझा दी।

निर्मला माता एक बार बैल गांव गई थी, वहाँ एक दरिया है। ये उसमें नहाने गई और उसमें पानी के साथ बह गई। इन्होने बाबा फकीर को याद किया, मुझे बचाओ, कहते हैं– बाबा फकीर आये और हाथ पकड कर पानी से बाहर निकाला। फिर निर्मला माता सेब और बादाम लेकर होशियारपुर गई और बाबा फकीर के सामने रख दिए। बाबा फकीर ने कहा– ये क्या है? वो बोली आप तो सब जानते है, मैं डूब रही थी, आप आए और मुझे पानी से बाहर निकाला। बाबा फकीर बोले– निर्मला चेत, मैं नही गया और ना ही मैंने तुमको पानी से बाहर निकाला और ना ही मुझे पता तू कब गई दरिया में नहाने, लेकिन तूने अपने मन से मेरी छवि बनाई और मुझे प्रकट किया और मुझसे काम लिया। तो ये हमारे मन का ही खेल है, क्योंकि उसका तो कोई रूप है ही नही है। वो एक Energy है, लेकिन हाँ उसका तन भी है, मन भी है, और आत्मा भी है, तीनो चीजें हैं। उसकी ये सारी कायनात उसका शरीर है, अरबों–खरबों चाँद–सितारे, ये उसका स्थूल शरीर है, और कहते हैं– God make man his own image, भगवान ने मनुष्य को अपने जैसा बनाया है। ये जरा समझने की बात है। God का स्थूल शरीर है ये सारी कायनात और मनुष्य का स्थूल शरीर ये शरीर है। मिल गई एक चीज समान। अब इस कायनात के ऊपर मन का एक अनंत सागर है जिसको बोलते हैं अव्याकृत और उसी का अंश हमारा मन भी है। तो दो चीज मिल गई। अब तीसरी चीज रह गई आत्मा, मन के ऊपर एक अनंत सागर है आत्मा का, जिसको हिरण्यगर्भ बोलते हैं और उसी का अंश हमारी भी आत्मा है। अब मिल गई तीसरी चीज। तो मनुष्य क्या बन गया? मनुष्य बन गया उसी का रूप। उसको बोलते है Macrocosm और मनुष्य को बोलते हैं Microcosm, God जो है विशाल है, वहाँ सब कुछ अनंत है। जैसे यहाँ आम का पेड बहुत बडा होता है और जापान में आम का पेड बहुत छोटा होता है, उसको बोलते हैं– बोन्जायी, उस पर आम भी लगते हैं। इसी तरह वो जो मालिक है, वही हम हैं। इसलिए कहते हैं– अगर भगवान को पहचानना है, तो अपने आपको पहचानो, Cheity begain his home, अगर भगवान से मिलना है तो पहले अपने आपको पहचानो, अपने आपको ढूँढते–ढूँढते एक दिन पता लगेगा आपको God क्या है? फिर क्या कहोगे आप? अरे जिसको मैं ढूँढ रहा था, वो तो मैं ही हूँ। नमक की डली समुद्र की तह ढूँढने जाती है। धीरे–2 नीचे जाती है, तह तक पहुँचती नही है, पहले ही सागर बन जाती है, इसी तरह आप भी। कबीर साहब कहते हैं–

लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल।
लाली देखन मैं गई, मैं ही बन गई लाल।।

जब हम भगवान को ढूँढने जाते हैं अपने अंदर, ढूँढते–2 उसी सागर में मिल जाते हैं। हम और मालिक एक हो जाते हैं।

मंसूर ईरान का बहुत बडा संत था, वो एक बार ध्यान में था। ध्यान में अचानक उसके मुंह से आवाज निकल गई, मैं ही अल्ला हूँ–मैं ही अल्ला हूँ, सारे चेले खडे हो गए, ये क्या कह दिया आपने ये तो कुरान के खिलाफ है। संत ने कहा– मुझे नही मालूम मैंने क्या कहा? लेकिन अगर मैं दुबारा बोलूंगा तो कुरान के हिसाब से जो सजा हो, वो मुझे दे देना। तो एक बार फिर वो ध्यान में था और उसके मुंह से निकल गया मैं ही अल्ला हूँ, तो चेलों ने उसका हुक्म माना और ले गए मुल्ला के पास। मुल्ला ने कहा– ये काफर है, इसके हाथ–पैर काटो और उसके हाथ–पैर काट दिए।

समस्तवरेज एक और संत था ईरान का, वो सबकुछ समझता था लेकिन वो बोलता नही था। एक बार एक औरत एक बच्चे को लेकर उसके पास आई और बोली तू अपने को बहुत बडा संत समझता है, तो तू मेरे बच्चे को जिंदा कर। संत ने कहा– माई मैं उसे जिंदा नही कर सकता। माई जिद पर आ गई, नही इसे जिंदा करो, तो उसने क्या किया? अल्ला के हुक्म से जिंदा हो जा, बच्चा जिंदा नही हुआ। उसने फिर से कहा– अल्ला के हुक्म से जिंदा हो जा, बच्चा फिर जिंदा नही हुआ। फिर तीसरी बार उसने कहा– मेरे हुक्म से जिंदा हो जा, बच्चा जिंदा हो गया। इसका मतलब क्या हुआ? कि अल्ला और वो एक ही है। अल्ला को कोई दूसरा नही है, तुम ही अल्ला हो, तुम वही हो। लेकिन ये उस कानून के खिलाफ था और उसको तेल के कडाहे में डाला गया। क्योंकि उसने कहा– अन–अलहक, अन–अलहक का मतलब होता है मैं ही खुदा हूँ तो उसको चौराहे पर लाया गया और सबसे कहा कि उसको पत्थर मारो। सब उसको पत्थर मारने लगे और उसका एक खास दोस्त था, वो भी वहाँ आ गया। जब सब लोग उसको पत्थर मार रहे थे तो वो नही चिल्लाया लेकिन जब उसके दोस्त ने उसको एक फूल मारा तो वो बहुत चिल्लाया। तो उसके दोस्त ने पूछा– ये लोग आपको पत्थर मार रहें है तो तुम कभी नही चिल्लाये और मैंने एक फूल फेंककर मारा तो तुम चिल्लाये। वो कहता है– तुम तो सब जानते हो अपनों से ही ज्यादा दर्द होता है। सोने ने लोहे से पूछा–भाई तुम भी लोहे से चोट खाते हो और मैं भी लोहे से चोट खाता हूँ लेकिन तुम ज्यादा चिल्लाते क्यों हो? लोहे ने कहा– जब अपने ही मारते हैं ना तो दर्द बहुत होता है। इसलिए जब उसने फूल मारा तो समस्तवरेज को दर्द हो गया, क्योंकि वो उसका अपना था और सच्चाई जानता था लेकिन सच्चाई बोल नही सकता था। तो सच्चाई क्या है? सच्चाई यही है जिसको हम ढूँढने जाते हैं मंदिरो में, मस्जिदों में, गिरिजाघरों में, वहाँ कोई भगवान नही है। जो कुछ है हमारे अंदर ही है, हम ही हैं। इसलिए कहते हैं– अपने आप को पहचानो, अगर God को पहचानना है तो अपने आपको पहचानो।

लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल।
लाली देखन में गई, मैं ही हो गई लाल।।

ढँढते–2 आप एक मंजिल पर पहुँच जाओगे, जहाँ आप कहोगे– अरे जिसको मैं ढूँढ रहा था वो तो मैं ही हूँ। आप जिसको खोजते हो जिसे मालिक कहते हैं, क्या वो धरती पर आ सकता है? नही आ सकता है, क्यों ? ये सूरज देखते हो, इसमें कितनी गर्मी है, कहते है अगर इसकी एक दिन की Energy इकट्ठी की जाए तो सारे World की एक साल की बिजली बन जाएगी। कहते हैं अगर सूरज 1 कि.मी. भी धरती के निकट आ गया तो धरती माचिस की तरह जल जाएगी, कुछ नही रहेगा। अब जिसने लाखों–करोडो सूरज बनाये हैं उसमें कितनी शक्ति होगी, क्या वो इस धरती पर आ सकता है? नही आ सकता, क्योंकि धरती उसका भार संभाल नही पाएगी। लेकिन वो आते हैं,

किस रूप में आते हैं? मनुष्य रूप में आते हैं। किस भाषा में आते हैं? तुम्हारी भाषा में आते हैं। रशिया में आएगें तो रशियन भाषा बोलेंगे, अमेरिका में आएगें तो अमेरिकन भाषा बोलेंगे और India में आएगें तो India की भाषा बोलेंगे। क्यो? ताकि लोग अपने सवाल पूछ सकें, अपने मन के संशय पूछ सकें और उनका जबाब उन्ही की भाषा में मिलेगा। तो युग–2 में वो आते रहते हैं, कृष्ण बनकर आये, कभी कबीर बनकर आये, कभी गुरू नानक बनकर आये, कभी बाबा फकीर बनकर आये, कभी मानव दयाल बनकर आये, कभी शब्दानंद बनकर आये, आते रहते हैं। ताकि इन भोले–भाले लोगों का कल्याण हो जाए, तुम अपने घर से बेघर हो गए हो तुमको अपने घर का पता चल जाए। ये संसार हमारा घर नही है, हम यहाँ यात्री हैं। मरते हैं, जीते हैं, इसी सफर में हैं और आज तक हम यही सफर करते रहें हैं। ये जो काल चक्र है, इस काल चक्र को ब्रेक तो लगाओ। कभी इस काल चक्र को तोड तो लो, कब तक तुम इस जन्म मरण के चक्र में पिसते रहोगे? कभी तो इसको ब्रेक लगाओ। हमारा जन्म क्यों होता है इस संसार में? हमारा जन्म इस संसार में मौज मस्ती करने के लिए, बच्चे बनाने के लिए नही होता, शराब पीने, शादी करने के लिए नही होता। हमारा जन्म एक अवसर है, मालिक ने हमको एक मौका दिया है कि तुम जो अपने कर्मों की टोकरी अपने साथ लाए हो, उसको खाली करो और वापिस अपने घर चले जाओ। लेकिन हमारी बदकिस्मती क्या है? हम अपने कर्मों की टोकरी को और भी भारी कर लेंते हैं, और इस संसार में दुबारा आने की जगह पक्की कर लेते हैं। लेकिन मालिक ने हमको मौका दिया है कि तुम फिर से जन्म मत लो। ठीक है तुम इस संसार में आ गए लेकिन फिर से जन्म मत लो, अपने कर्मों की टोकरी को खाली करो, अगर उस टोकरी में एक कर्म भी रह गया, फिर से जन्म। शब्दानंद जी महाराज कहते थे One mark less, one year more यानि परीक्षा में पास होने के लिए 33 नम्बर लाने है, लेकिन 32 नम्बर आ गए, फिर से जन्म। फिर से वही स्कूल, वही Teacher, वही किताबें, इसी तरह हमारी टोकरी में एक कर्म भी रह गया, फिर से जन्म। टोकरी को खाली करना है, अब आप लोगो के मन में सबाल होगा, टोकरी कैसे खाली करें? उसके लिए कबीर साहब ने कहा है–

सतगुरू खोजो रे भाई, जग में दुर्लभ रतन यही है।

अगर संसार में कोई दुर्लभ रत्न है, वो है सतगुरू और सतगुरू ही वो शख्स है जो आपकी टोकरी को खाली करवाएगा और आपको अपने देश ले जाएगा। ये काम सिर्फ सतगुरू ही कर सकता है और कोई नही कर सकता है। एक साईंटिस्ट हिमालय की ऊँचाई माप सकता है, चाँद सितारों की दूरी माप सकता है, सागर की गहराई माप सकता है, लेकिन कभी भी अपने आपको नही माप सकता है, क्योंकि अपने आपको मापने के लिए किसी दूसरे साईंटिस्ट की जरूरत है और वो साईंटिस्ट है–सतगुरू। जिसको सतगुरू मिल गया वो भाग्यशाली है, सबको सतगुरू नही मिलता और सबके लिए वो आता भी नही है। क्या एक संत सारे संसार को मुक्ति दिला सकेगा? नही दिला सकेगा, जीसस क्राईस्ट कहता था– ये जो मेरे शिष्य हैं ये मेरी भेडे हैं और मैं इन्ही का जिम्मेवार हूँ और मैं इन्ही को अपने साथ ले जाऊँगा। यही सतगुरू का काम है, वो अपनी भेडों को अपने साथ ले जाएगा। सतगुरू एक बार जिसका हाथ पकड लेता है फिर उसे कभी नही छोडता है, सतगुरू में ये एक खासियत है।

गीता में श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा– यदि अंत समय मे तुमको मेरी याद आएगी तो तुम्हारी मुक्ति है। तो अर्जुन कहता है– ये कौन सी बडी बात है, मैं अंत समय में तुमको याद करूँगा। कृष्ण बोले– नही, ऐसे नही होगा, आदत डालनी पडेगी, तब जाकर अंत समय तुमको मेरी याद आएगी। अगर तुम सारी जिंदगी पैसा बटोरने में लग गए तो तुमको मेरी याद नही आएगी, पैसा ही याद आएगा।

एक संत था, उसने अपने चेलो से कहा– देखो मेरा अंत समय आ रहा है। जब मेरी आत्मा ये शरीर छोड देगी तो ये घण्टा बजेगा, और जब घण्टा बज जाए तो समझना मेरी मुक्ति हो गई है। तो

गुरूजी को बगीचे में लिटाया और गुरू जी ने कहा– मेरा अंत समय आ गया है, कुछ ही मिनटो में, मैं चोला छोड दूंगा। उसने चोला छोड दिया, लेकिन घण्टा नही बजा। सारे चेले परेशान हो गए, उनका दाह संस्कार कर दिया लेकिन सारे चेले परेशान कि हमारे गुरू जी की आत्मा ऊपर (धुरपद धाम) नही पहुँची। उस संत का एक और दोस्त था, वो भी संत था, तो सारे चेले उस संत के पास गए और उनको बताया– हमारे गुरूजी ने ऐसे–2 कहा था, लेकिन घण्टा नही बजा। तो उस संत ने कहा– उनको कहाँ लिटाया था, चेलों ने कहा– जी यहाँ लिटाया था, तो वो संत वही पर लेट गया और उसने देखा– उसके सामने ऊपर एक अमरूद का पेड था और उसमे एक बहुत सुदर अमरूद लगा था। वो समझ गया, उसने चेलों से कहा– उस अमरूद को उतारो, इसे काटो और जब उस अमरूद को काटा तो उसके अंदर एक कीडा निकला, संत बोला– इस कीडे को मारो और जब उस कीडे को मारा तो घण्टा बज गया। तो क्या था? अंत समय में उसको अमरूद याद आ गया और उसको इच्छा हो गई अमरूद खाने की और वो कीडा बनकर अमरूद में चला गया और अमरूद खाने लगा। इसी तरह भगवान कृष्ण ने अर्जुन से कहा– अंत समय में जब तुम मेरा नाम याद करोगे तो तुम्हारी मुक्ति हो जाएगी। तो अर्जुन ने कहा– मैं करूँगा, इसमें कौनसी बडी बात है। कृष्ण बोला– तुमने सारी जिंदगी में जो किया वही अंत समय में याद आएगा। तो

सतगुरू खोजो रे भाई, जग में दुर्लभ रतन यही।

अगर आपको इस संसार से छुटटी दिलानी है, कर्मों की टोकरी खाली करनी है, तो सतगुरू खोजो। आपको एक बात और बताऊं– सतगुरू खोजने से नही मिलेगा। अगर तुम सतगुरू खोजने जाओगे और किसी से पूछोगे कि भाई मैं गुरू करना चाहता हूँ कोई अच्छा सा गुरू बताओ? तो बो बोलेगा– चलो एक गुरू है, गले में मोतियों की माला, सफेद दाडी, हजारों की भीड, और इस तरह आप किसी ठग के पास पहुँच जाओगे। गुरू खोजने का तरीका सिर्फ एक ही है, अपने अंदर चार सवाल पैदा करो, मैं कौन हूँ? मैं कहाँ से आया हूँ? मैं क्यों आया हूँ? मुझे कहाँ जाना है? ये चार सवाल अपने अंदर पैदा करो और इन चार सवालों के जबाब ढूँढो। जब आप सच्चे दिल से इन चार सवालों के जबाब ढूँढने लगोगे तो गुरू आपके सामने, खुद ही आएगा, आपको ढूँढना नही है। गुरू कहेगा– आ बेटा मैं बताता हूँ, तेरे सवालों का जबाब। सबसे उत्तम तरीका यही है गुरू ढूँढने का। अगर तुम टार्च लेकर जाओगे, कौनसा डेरा अच्छा है, कौन से डेरे में लगर अच्छा है या कौन से डेरे में भीड ज्यादा है, तो तुम खो जाओगे। इसलिए तुम्हें कहीं जाने की जरूरत नही है। अपने घर में बैठो और मालिक से मिलने की इच्छा पैदा करो, गुरू आपके सामने खुद ही। जो मैं आपको बता रहा हूँ ये हिस्ट्री बता रही है। परमदयाल जी को गुरू ऐसे ही मिले, मानव दयाल जी को गुरू ऐसे ही मिले, ये हिस्ट्री है, ये मैं अपनी बात नही बता रहा हूँ।

सतगुरू खोजो रे भाई, जग में दुर्लभ रतन यही है।

!! राधा–स्वामी !!